



MP-TET

शिक्षक पात्रता परीक्षा

MADHYA PRADESH PROFESSIONAL EXAMINATION BOARD

प्राथमिक स्तर

भाग – 2 (ब)

संस्कृत



संस्कृत व्याकरण कौशल रचना

1. वर्ण-प्रकरण	1
2. संधि	2
3. शुबलत प्रकरण/विडलत प्रकरण	32
4. वाच्य परिवर्तनम	51
5. उपसर्ग	56
6. प्रत्यय	58
7. पर्यायवाची शब्द	63
8. विलोम शब्द	65
9. ऋव्यय प्रकरण	66
10. समासः प्रकरण	69
11. ऋपठित पघांश	77
12. ऋपठित गघांश	80

वर्ण - प्रकरण

वर्ण - "वर्ण्यन्ते अभिव्यञ्ज्यन्ते वा लघुतमौ ध्वनिः येन स वर्णः।"

"ध्वनि का वह लघुतम अंश, जो अखण्डित हो वर्ण कहलाता है।"

जैसे - 'शमः' शब्द में र्, शा, म्, म् और स् (ः) - ये पाँच वर्ण हैं इन पाँचो वर्णों में से किसी का टुकड़ा नहीं हो सकता है। ये अखण्डित हैं।

संस्कृत - वर्णमाला में निम्नलिखित वर्ण होते हैं -

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ऋ ॠ कृ ए ऐ औ औ

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व

श ष स ह

अनुस्वार (ँ)

विसर्ग (ः)

द्विकाम्बुधिय ५ क

उपध्मानीय ५ प

वर्णमाला ⇒
⇒ वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं।

संस्कृत वर्णमाला में कुल 50 वर्ण हैं।

उपयुक्त वर्णों को प्रकृत: दो वर्णों में विभक्त किया गया है।

- ① स्वर वर्ण (Vowels) ② व्यंजन वर्ण (Consonants)

स्वर वर्ण → “ स्वर्यं राजन्ते इति स्वराः ”।

अर्थात् जो वर्ण स्वर्यं उच्चरित हो 'स्वर वर्ण' या अक्षर' कहलाते हैं इसके अन्तर्गत 'अ से औ' तक आते हैं इनकी सं० 13 होती है।

व्यंजन वर्ण → “ व्यञ्ज्यते वणन्तिर - सीयोगेन द्योत्यते ह्वनि विशेषो येन तद् व्यंजनम् । ”

अर्थात् जो वर्ण स्वर्यं उच्चरित न होकर स्वर की सहायता से ही 'व्यंजन वर्ण' या 'ह्रस्व' कहलाते हैं।

इसके अन्तर्गत 33 वर्ण आते हैं - 'क से ह तक।

⇒ स्वर और व्यंजन वर्णों के अलावा 'अयोग्य वर्णों' का प्रयोग भी देखा जाता है इसके अन्तर्गत अन्धकार, विसर्ग, विकामुलीय और उपध्मानीय - ये चार वर्ण आते हैं।

प्रत्याहार सूची में इनका प्रयोग नहीं है।

स्वर वर्णों तीन प्रकार के होते हैं -

- Ⓐ ह्रस्व स्वर
- Ⓑ दीर्घ स्वर
- Ⓒ लघु स्वर

ह्रस्व स्वर में अ, इ, उ, ऋ एवं ए दीर्घ स्वर में आ, ई, अ, ऋ, ए, औ, औ आते हैं। लघु स्वरों को लिखते हैं लिये किसी दीर्घ स्वर के आगे 3 (तीन संख्या का चिन्ह) लिख दिया जाता है।

जैसे - आ 3, ई 3, ओ 3, म् आदि।

→ उच्चारण काल को 'मात्रा' कहते हैं। इस आधार पर ह्रस्व स्वर, दीर्घ वी, लघु, तीन, स्वर व्यञ्जन वर्ण साक्षी मात्रा का होता है।

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए स्वर वृत्त की समान स्वर परन्तु ए, ऐ, औ स्वरों को 'संध्य स्वर' (Dipthongs) कहते हैं।
 उक्त चारों वर्ण संधि के कारण बने हैं।

अ/आ + इ/ई = ए

आ/आ + इ/ई = ऐ

अ/आ + उ/ऊ = औ

आ/आ + ओ = औ

Note - ए स्वर 'औ' गुण से कारण तथा 'ऐ' स्वर 'औ' वृद्धि के कारण बने हैं। इसकी विस्तृत चर्चा संधि में होगी।

स्वरी के तीन अर्थ प्रकार भी हैं।

- ① उदात्त = तालु भाग के उच्च भाग में उच्चारित वर्ण।
- ② अनुदात्त = निम्न भाग से उच्चारित वर्ण।
- ③ स्वरित = मध्यभाग से उच्चारित वर्ण।

व्यंजन वर्ण 5 वर्गों में विभक्त हैं और पाँचों 5-5 वर्ण आते हैं।
 जो वर्गीय या स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं।

① क वर्ण - क से ह

② च वर्ण - च से मू

③ ट वर्ण - ट से ण

④ त वर्ण - त से न

⑤ प वर्ण - प से म

उच्च वर्णों के उच्चारण में धिक्का (जिह्वा) का अग्र, मध्य और पश्च भाग का स्पर्श होता है।

⇒ स्पर्श एवं उच्च वर्णों के बीच में अवस्थित होने के कारण य, र, ल, व अक्षरस्थ व्यंजन कहलाते हैं। श, ष, स, ह की उच्च वर्ण कहते हैं क्योंकि इनके उच्चारण में मुँह से गर्म वायु निकलती है।

वर्णों के उच्चारण स्थान →

वर्णों के उच्चारण स्थान 7 हैं।

कण्ठ, तालु, मूर्धनि, दन्त, ओष्ठ्य, नासिका, और जिह्वा-मूल।

⇒ उच्चारण स्थान के आधार पर निम्नलिखित प्रकार के वर्ण होते हैं।

- ① कण्ठ्य वर्ण (अकुष्ठविसर्जनीयानां कण्ठः) → अ, आ, क वर्ण, ए और विसर्ग कण्ठ के उच्चारित होने के कारण। कण्ठ्य वर्ण कहलाते हैं।
- ② तालव्य वर्ण (श्चुयशानां तालु) → इ, ई, च वर्ण, य और श तालु से उच्चारित होते हैं इसलिये ये तालव्य वर्ण हैं।
- ③ मूर्धन्य वर्ण (ऋटुशानां मूर्धनि) → ऋ, ॠ, ट वर्ण, र और ष-मूर्धन्य वर्ण हैं, क्योंकि इसका उच्चारण स्थान मूर्धनि है।
- ④ दन्त्य वर्ण (भृटुलसानां दन्ताः) → षट्, त वर्ण, ल और स - 'दन्त्य वर्ण' के क्योंकि इनका उच्चारण स्थान दंत है।
- ⑤ ओष्ठ्य वर्ण (अपपद्यमानां ओष्ठौ) - अ, ङ प वर्ण और अपद्यमान्य वर्ण ओष्ठ से बोलने के कारण ओष्ठ्य वर्ण कहलाते हैं।

नासिक्य वर्ण (अमङ्गलानां नासिका च। नासिकानुस्वारस्य) :

उ, अ, ण, न, म और णुस्वार भाक सौ उच्चारित दीने के कारण 'नासिक्य वर्ण' कहलाते हैं।

कण्ठतालव्य वर्ण - (रुद्धेती; कण्ठतालु) → ए और ऐ का उच्चारण कंठ और तालु दीनी से दीने के कारण ये 'कण्ठ तालव्य वर्ण' हैं।

कण्ठीढ्य वर्ण - (ओदौतो; कण्ठीढ्यम्) → औ और औँ का उच्चारण - स्थान कण्ठ एवं ओष्ठ दीनी हैं। इसलिये ये दीनी वर्ण 'कण्ठीढ्य' हैं।

दन्तौढ्य वर्ण - (वकारस्य दन्तौढ्यम्) - 'व' का उच्चारण-स्थान दाँत और ओष्ठ हैं।

जिह्वामूलीय वर्ण - (जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्) - जिह्वामूलीय का उच्चारण स्थान जिह्वामूल हैं।

वर्ण संयोजन एवं वियोजन ⇒

स्वरी के दो रूप होते हैं -

1. मूल रूप
2. मात्रा रूप

जब व्यंजन वर्ण से स्वर मिलते हैं तब उनके मात्रा रूप लिखे जाते हैं।

वर्ण	स्वर	वर्ण (स्वरयुक्त)	स्वर चिन्ह (मात्रा रूप)
क	अ	क	१
क	आ	का	१
क	इ	कि	१
क	ई	की	१
क	उ	कु	१
क	ऊ	कू	१
क	ऋ	कृ	१
क	ॠ	कृ	१
क	ए	के	१
क	ऐ	कै	१
क	ओ	को	१
क	औ	कौ	१

Note - 'अ' एवं 'ए' का मात्रारूप नहीं होता है। 'अ' वर्ण-का-
 वर्णों वर्णों वर्णों में विरोधित हो जाता है जबकि
 'ए' स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होता है।

ध्वनियों को मिलाकर शब्द/पद बनाना ही 'वर्ण-संयोजन' कहलाता
 है तथा शब्द या पदों में प्रयुक्त वर्णों की आगम-२ दिखाना
 वर्ण-विघोजन है।

यथा	वर्णविघोजन	वर्ण संयोजन
	अ इ आ	अइआ
	त आ न इ	तानि
	प अ श य आ म इ	पश्यामि

⇒ वर्ण-वियोजन को ही 'वर्ण वियोग' कहा जाता है वर्ण-संयोजन - या वियोजन के लिये निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिये

३ संयुक्त (स्फुल) होने वाले वर्ण के बाद स्वर नहीं रहता।

$$क + ष + अ = क्ष$$

$$तृ + र् + अ = त्र$$

$$लृ + र् + अ = लृ$$

$$दृ + यृ + अ = द्य$$

$$शृ + र् + अ = श्र$$

$$पृ + र् + अ = प्र$$

$$दृ + धृ + अ = द्ध$$

$$दृ + दृ + अ = द्द$$

$$भृ + र् + अ = भ्र$$

उपरोक्त संयुक्ताक्षर इसी रूप में लिखे जाते हैं।

अतएव वर्ण-वियोग या संयोजन करते समय इन पर ध्यान देना अपेक्षित है।

प्रत्याहार " प्रत्याहियन्ते संक्षिप्यन्ते वर्णः एतेति प्रत्याहारः।"

" जिस वर्ण से वर्ण-समुदाय संक्षिप्त कर दिये जाते हैं

उस विधि का नाम 'प्रत्याहार' है। "

अधिक से अधिक या कुछ निश्चित वर्णों की उनके शुरु और अंतवाले केवल दो वर्णों के स्वरों बता देने का नाम ही प्रत्याहार है।
इसी वर्ण संक्षेप के नाम से भी जाना जाता है।

व्याकरण के सूत्रों की प्रत्याहार के स्वरों की व्यवस्था मिया जाता है।

जैसे- यदि हम संस्कृत में स्वरों की श्रुति कहते हैं।

ती इसके अन्तर्गत अ, इ, उ, ऋ, ए, ए, ऐ और औ
 और आदि वर्ण हैं। इसी तरह 'कृ' के अन्तर्गत इ, उ और
 ऋ वर्ण आते हैं।

इस प्रत्याहार - विधि का सर्वप्रथम प्रयोग भगवान्
 शिव ने किया था - वैसे ही मायता हैं परन्तु ऐसा कोई
 व्याकरण नहीं है। जिसे शिवप्रणमि माना जा सके। हाँ, 14 प्रत्याहार
 सूत्र अक्षर्य प्राप्त हैं, जिन्हें माकेश्वर - सूत्र या प्रत्याहार सूत्र
 के नाम से जाना जाता है। ये सूत्र निम्नलिखित हैं।

- | | | | |
|------------|--------------|----------------|-----------|
| (a) अइउण् | (e) अयवरट् | (i) धट्टधष् | (m) शबसन् |
| (b) ऋत्वक् | (f) ऋण् | (j) ऋगड्यश् | (n) ऋ |
| (c) एओइ | (g) अमडठानम् | (k) खफट्टथचयत् | |
| (d) ऐऔच | (h) इन्नञ् | (l) कपय | |

प्रत्याहार कैसे बनाये →

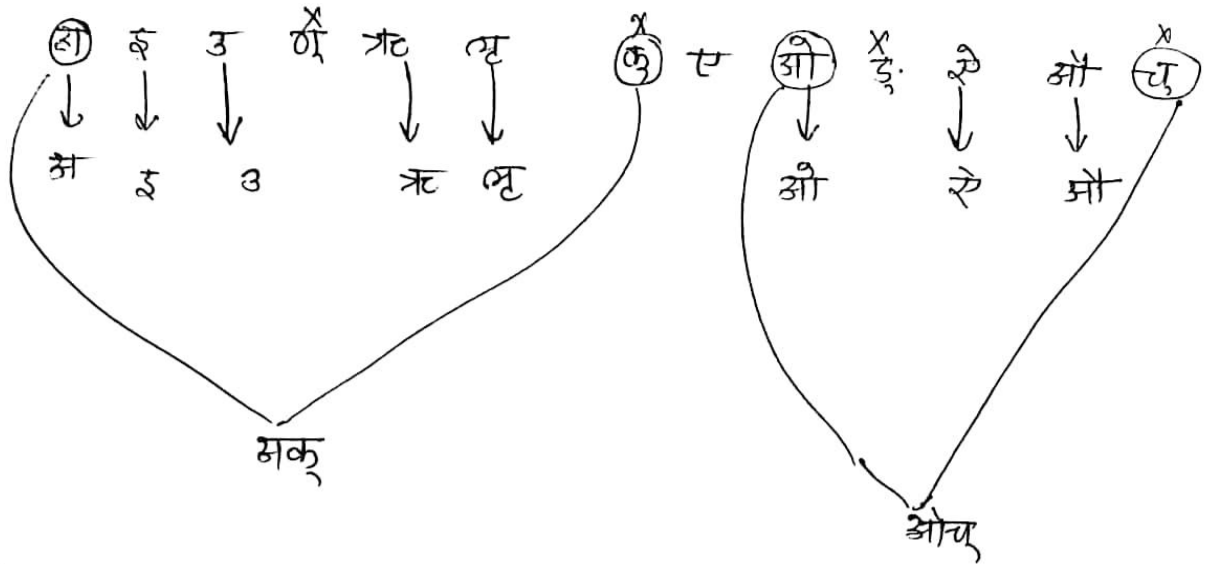
व्याकरण के नियम 'अकृ' 'इच' और 'कल्' होते हैं।
 'अ, इ, उ, ऋ' का प्रथम अक्षर 'अ' और 'ऋत्वक्' का
 'क' - ये दोनों मिलकर 'अकृ' बने। इसके अन्तर्गत
 अ, इ, उ, ऋ और ए - ये 5 वर्ण आये।

इसी तरह 'एओइ' का 'ए' एवं 'ऐऔच' का 'च'
 मिलकर 'इच' प्रत्याहार बना। 'इच' के अन्तर्गत इ, औ, ऐ
 और - ये चार वर्ण आये।

इसी प्रकार 'कल्' प्रत्याहार में क, प, श, ष, स और
 ह वर्ण आते हैं।

प्रत्याहार बनाने के नियम 14 सूत्रों में से प्रत्याहार के प्रथम
 वर्ण को दूबना चाहिये।

फिर उन्ही सूची में से प्रत्यक्ष के अक्षर वर्ण को।
 अब दोनों के बीच आने वाले तमाम वर्णों को लिखना चाहिये।
 नीचे के उदाहरण से समझ सकते हैं —



Note - प्रत्यक्ष के अंतर्गत आनेवाले वर्णों में मूल वर्ण की गणना नहीं की जाती है।

कुछ प्रमुख प्रत्यक्ष

मक = अ इ उ ऋ ॠ

इक = इ उ ऋ ॠ

ऐक = ऐ औ

अच = अ इ उ ऋ ॠ ए ऐ औ औ

रुऌ = ए औ

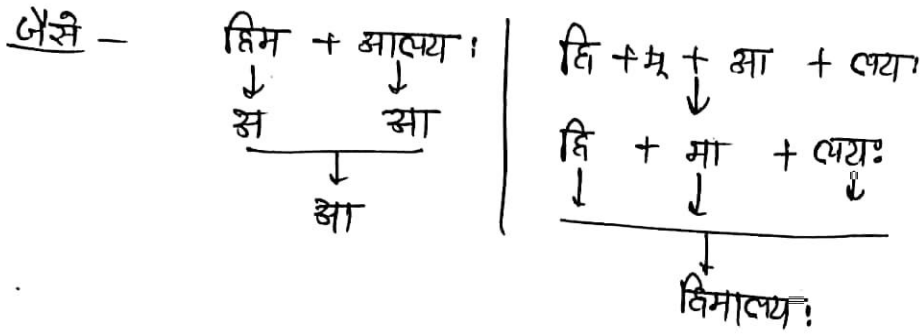
चर = च ट ठ क प श ष स

इसी तरह से मक, मक, जस, दक आदि प्रत्यक्ष बनेंगे।

संधि

“वर्णानां परस्परं विकृतिमात्रं संधिः”

दो वर्णों में अति निकटता के कारण उनके मेल में जो विकार होता है उसे संधि कहते हैं।



अपयुक्त आकारण में 'म' में निहित स्वर 'म'स्के 'आत्पय' का आद्य स्वर 'आ' - दोनों मिलकर आ बन जाये अर्थात् इन दोनों में संधि हुयी है।

→ किस पूर्ववर्ती शब्द के अंतिम वर्ण के साथ परवर्ती शब्द का आदि वर्ण मिलता है तब, वहिः संधि हुयी जाती है।

जिसी प्रतिपाठिक अथवा धातु के अंतिम वर्ण के साथ विकृतियों के आद्यस्वर का जैब मेल होता है तब उसे 'अंतः' संधि कहते हैं।

→ धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त शब्दों को छोड़कर सभी साधक शब्दों को 'प्रतिपाठिक' कहते हैं।

जैसे - दैव, राजा आदि

“अथविदधातुर प्रत्ययः प्रातिपदिकम्।”

→ वधिः संधि तीन प्रकार की होती है।

1. स्वर (इत्) संधि 2. व्यंजन संधि

3. विसर्गः संधि

स्वर संधि (अनु संधि)

“स्वर वर्णों के साथ स्वर वर्ण के मेल ही जो विकार होते उसे स्वर संधि कहते हैं।”

(स्वर वर्ण + स्वर वर्ण = विकार)

जैसे - महा + इन्द्रः = महीन्द्रः
 ↓
 मा + इ = ए

इस उदा० में मा + इ = ए लौ स्वरों का मेल हुआ है।

→ यह विकार आठ रूपों में दिखाई दे।

- Ⓐ दीर्घ Ⓑ गुण Ⓒ वृद्धि
- Ⓓ यण Ⓔ अयादि Ⓕ पूर्वव्यय
- Ⓖ परस्पर Ⓖ प्रकृतिभाव

इनके नियम एवं सूत्र इस प्रकार हैं —

1. अकः सवर्णे दीर्घः → जो परस्पर समान स्वर वाले चाहे द्वय ही या दीर्घ, दोनों मिलकर दीर्घ ही जाते हैं।

जैसे —

अ/आ + अ/आ = आ

महा + आशयः = महाशयः (आ + आ) = आ

एच + आकरः = एमाकरः (अ + आ) = आ

इ | ई + इ | ई = ई

अति + इव = अतीव (इ + इ = ई)

मही + इन्द्रः = महीन्द्रः (ई + इ = ई)

$$\underline{\text{उ। क + उ। क = ऊ}}$$

$$\text{लंघु + अग्निः} = \text{लंघुग्निः} \quad (\text{उ + क = ऊ})$$

$$\text{वधु + अह्नम्} = \text{वधुह्नम्} \quad (\text{क + क = ऊ})$$

$$\underline{\text{ऋ / ृ + ऋ / ृ = ॠ / ॡ}}$$

$$\text{पितृ + ऋणम्} = \text{पितृणम्} \quad (\text{ऋ + ृ = ॠ})$$

(B) आदगुणः

(a) अ। आ के फँरे ह्रस्व 'इ' या दीर्घ 'ई' रूके ती दीनी मिलकर रू ही जाते हैं।

$$\text{थानि अ। आ + इ। ई = ए}$$

$$\text{जैसे - वै + इन्द्रः = वैन्द्रः} \quad (\text{अ + इ = ए})$$

$$\text{रमा + ईशः = रमैशः} \quad (\text{आ + ई = ए})$$

(b) अ। आ के बाद उ। ऊ रूके ती दीनी मिलकर 'औ' ही जाते हैं।

$$\text{अथति अ। आ + उ। ऊ = औ}$$

$$\text{जैसे - नील + उत्पलम्} = \text{नीलौत्पलम्} \quad (\text{अ + उ = औ})$$

$$\text{महा + उप्यः} = \text{महौप्यः} \quad (\text{आ + उ = औ})$$

$$\text{गंगा + अग्निः} = \text{गंगौग्निः} \quad (\text{आ + ऊ = औ})$$

(c) अ। आ के बाद ऋ रूके ती दीनी 'अर' ही जाता है।

इसमें 'अ' ध्वनि धीजन से मिल जाता है और र

अगले वर्ण पर 'रि' के रूप में प्रयुक्त होता है।

$$\text{जैसे - महा + ऋषिः} = \text{महर्षिः}$$

आ०- मका + ऋषिः
 (अखर लीजने) ह आ ऋ = अर

(स्वर निकाल लिया गया)

विचिह्न वर्ण → म + ह + अरु + णि

ऋषि पर रेफ
 व ('ह' 'अ' से मिलकर)
 स्वरयुक्त हो गया

संधि पश्चात् रूप (मकषिः)

०) वृद्धिरैचि → म आ के बाद ए ऐ र्के ती दोनी मिलकर ऐ
 एवं औं औं र्के ती दोनी मिलकर 'औं' हो जाती है।

यानी, म | आ + ए | ऐ = ऐ

म | आ + औं | औं = औं जैसे -

जैसे - अक्ष + रक्ष = अक्षैव अक्षैव (म + म = ऐ)

मत + रक्ष = मत्तैव्य (अ + ऐ = ऐ)

सदा + रक्ष = सदैव (आ + ऐ = ऐ)

अण + ओद्यः = अणौद्यः (अ + औं = औं)

सदा + औत्सुक्यम् = सदात्सुक्यम् (आ + औं = औं)

अपवाद - धातु का स्कार या औकार पर र्के ती उपसर्ग के
 म | आ का लोप हो जाता है। 'ए' और 'औं' उपसर्ग
 में मिल जाते हैं।

जैसे - प्र + र्जते = प्रैजते

पुरा + ओदित = पुरोदित

परन्तु 'रक्ष' / 'इण' / 'क्षु' के (ए) पर र्के ती पर ऐसा नहीं होता

जैसे - उप + र्क्षते = उपैक्षते

मत + र्क्षति = मत्तैक्षति

① इकोऽरात्तुचि -

अदि ह। ई के बाद कोई भिन्न स्वर रहे तो इ ई का य दो
 आता है और 'य' पूर्व वर्ण से मिल जाता है।

यानी, इ + ई + भिन्न स्वर (इ ई का जोड़ करके रखते हैं)
असे - य

अति + आचारः = इ + आ = या
 अत्याचारः

अति + उक्तिः = अयुक्तिः = इ + उ = यु

② अदि उ। क के बाद भिन्न स्वर रहे तो उ। क का व की आवाज
 और व। व पूर्व वर्ण से मिल जाता है।

यानि उ। अ + भिन्न स्वर (इ, ऊ, ए) होकर कोई स्वर
 प

असे - सु + आगतम् = स्वागतम् (उ + आ = व)

मधु + रति = मधुरति (उ + र = व)

© यदि 'ऋ' के बाद कोई भिन्न स्वर रहे तो 'ऋ' का 'र' दी जाता है और वह पूर्व के वर्ण से मिल जाता है।
 इसी तरह 'ऌ' के बाद भिन्न स्वर रहने पर 'ऌ' का 'ल' दी जाता है।

यानी, ऋ/ऌ + भिन्न स्वर (ऋ/ऌ को छोड़कर कोई स्वर)
 \downarrow
 र + ल

जैसे - माह + आनंदः = मात्रानंदः (ऋ + आ) = रा
 ऌ + आकृतिः = लाकृतिः (ऌ + आ = ला)

(E) स्योऽयावायवः

Ⓐ यदि 'स्य' के बाद कोई स्वर ही तो 'स्य' का 'अय' दी जाता है। 'अकार' पूर्व वर्ण से और 'यु' अगले के वर्ण से मिल जाता है।

यानी, स्य + अन्य स्वर (स्य को छोड़कर)
 \downarrow
 अय

जैसे - स्य + अनम् = नयमम् (स्य + म = य)

Ⓑ स्य के बाद कोई स्वर ही तो स्य का 'आय' दी जाता है। 'आय' का आकार पूर्व वर्ण से एवं 'यु' अगले वाले वर्ण से मिल जाता है।

यानी, स्य + अन्य स्वर → आय

जैसे - स्य + अकः = नायकः (स्य + अ = आय)

विने + अकः = विनायकः (स्य + अ = आय)